(IJASSH) 2017, Vol. No. 3, Jan-Jun e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722

महात्मा गाँधी के सत्याग्रह की अवधारणा और उसकी प्रासंगिकता

डा. मनिन्द्र जीत कौर

व्याख्याता हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय, सूरतगढ़

MAHATMA GANDHI'S CONCEPT OF SATYAGRAHA AND ITS RELEVANCE

Dr Maninder Jeet Kaur

Lecturer, Dept of Hindi, Government College, Suratgarh, Shriganganagar

ABSTRACT

Mahatma Gandhi dominated Indian politics as a undisputed leader after 1916. He was a world-renowned figure whose name is unrecognizable. Gandhi always focused on the welfare of the world and always achieved this goal. His field of thought is vast and multifaceted. In all his work, Gandhiji kept in mind the values and beliefs embedded in Indian tradition and culture. He had to develop a framework for his actions in leading all the movements for independence. The foundation of his entire philosophy is truthfulness.

Keywords: Mahatma Gandhi; Satyagrah; economic discrimination; boycott; independence

सारांश

महात्मा गाँधी 1916 के पश्चात भारतीय राजनीति में एकछत्र नेता के रूप में छाये रहे। वे एक ऐसी विश्वविख्यात विभूति थे जिनके नाम से कोई भी अपरिचित नहीं है। गाँधी ने सदैव विश्व के कल्याण की बात सोची और सदैव उसी लक्ष्य को लेकर अपने उदेश्य में सफल हुए। उनके चिंतन का क्षेत्र बहुत व्यापक और बहुआयामी है। गाँधी जी ने अपने समस्त कार्य करते हुये भारतीय परम्परा और संस्कृति में समाहित मूल्यों एवं मान्यताओं को ध्यान में रखा। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये जितने भी आन्दोलन किये गये उनको चलाने में उन्हें अपने कार्यों की रूपरेखा बनानी पड़ी। उनके समूचे दर्शन की बुनियाद सत्य निष्ठा है।

शब्द : महात्मा गांधी, सत्याग्रह, आर्थिक भेदीाव, बहिश्कार, स्वतंत्रता।

प्रस्तावना

गाँधी जी मूलतः राजनीतिक विचारक नहीं थे और न ही कोई दार्शनिक थे। वे तो एक ऐसी महान विभूति थे जिन्हें ईश्वर में अटूट आस्था थी इसीलिये उनके चिंतन का आधार सत्य और अहिंसा थे। वे मौलिक रूप से कर्मयोगी थे। भारतीय लोगों को राजनीतिक दासता, सामाजिक अन्याय और विषमता, आर्थिक भेदभाव पर ब्रिटिश साम्राज्य की दमनकारी नीतियों ने अत्यधिक कष्टमय बना दिया था। गाँधी ने संकीर्ण राष्ट्रवादी भावनाओं से ऊपर उठकर एक व्यापक परिप्रेक्ष्य में ऐसा विचार दर्शन प्रस्तुत किया जिसमें सम्पूर्ण मानव समाज को राजनीतिक क्षेत्र में एक नवीन दिशा प्रदान की। गाँधी जी सम्पूर्ण विश्व में संभवतः प्रथम आन्दोलन कर्ता थे, जिन्होंने अहिंसक साधनों के माध्यम से सम्पूर्ण भारत के भविष्य की रूपरेखा को न केवल बदल डाला बल्कि उसे सृजनात्मक शक्ति और विचारों से भी भर दिया। गाँधी जी द्वारा प्रतिपादित सत्याग्रह की तकनीक ऐसी थी जिसने नागरिकों को संसार से अहिंसात्मक प्रतिरोध करना सिखाया।

सत्याग्रह की अवधारणा : *गाँधी जी इस तथ्य से पूर्णतया परिचित थे कि वर्तमान समाज में हिंसा की जिस घातक प्रवृत्ति का विस्तार हो गया है उसके प्रतिकार का एक मात्र तरीका सत्य और अहिंसा का मार्ग अपनाना ही होगा। हिंसा का जबाब हिंसा से देना उचित नहीं है क्योंकि अगर हिंसा को खत्म करना है तो यह कार्य अहिंसा की शक्ति ही कर सकती है। अतः गाँधी जी ने हिंसा का जबाव जिस अहिंसक रूप में दिया उसे सत्याग्रह का नाम दिया गया।*

सत्याग्रह का अर्थ : *सत्य पर अडिग रहना। सत्याग्रह शब्द का प्रयोग गाँधी जी ने सबसे पहले दक्षिण अफ्रीका में किया था। गाँधी जी ने अन्याय के विरूद्ध जिस पद्धति का प्रयोग किया उसे बाद में सत्याग्रह नाम दिया गया। गाँधी जी ने लिखा दक्षिण अफ्रीका में हमारी शैली घृणा को प्रेम से जीतने की है। हम व्यक्तियों को दण्डित करना नहीं चाहते बल्कि*

(IJASSH) 2017, Vol. No. 3, Jan-Jun e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722

सिद्धान्ततः उनके हाथों यातनाएं भोगना चाहते हैं। इसे गाँधी जी ने 'पेसिव रेसिस्टेन्स' कहा लेकिन उन्हें यह शब्द सही नहीं लगा। इसके लिये उन्होंने इण्डिन ओपिनियन में सुझाव मांगे। मदन लाल गाँधी ने 'सदाग्रह' शब्द का सुझाव दिया जिसे गाँधी जी ने 'सत्याग्रह' में रूपान्तरित कर दिया।''[1] गाँधी जी के अनुसार 'सत्याग्रह' में अहिंसा शक्ति का वह प्रयोग है जिसका उदेश्य प्रतिपक्षी को बिना किसी प्रकार का शारीरिक या मानसिक पहुंचाये परिवर्तन लाना है अर्थात उसे असत्य से सत्य के मार्ग पर लाना है। अपने आप को 'आत्मपीड़ा' पहुंचाकर सत्याग्रही अपने विरोधी को इस बात के लिये आश्वस्त कर देता है कि सत्याग्रही उसका सच्चा हितैषी है। टॉल्सटाय की इस विचारधारा ने उनके मनोमस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डाला कि 'पाप से घृणा करो, पापी से नहीं। इसलिये उन्होंने कभी भी अपने सत्याग्रह आन्दोलन के दौरान विरोधी पक्ष से घृणा अथवा शत्रुता नहीं की बल्कि बुराई और अन्याय का प्रतिरोध किया। उनके अनुसार सत्याग्रह करने वाला सदैव यह प्रयास करेगा कि दुराचार पर सदाचार की विजय हो, क्रोध को प्रेम से, असत्य को सत्य से और हिंसा को अहिंसा से परास्त करें।

गाँधी जी ने कहा ''सत्याग्रह शब्द का प्रयोग प्रायः बहुत शिथिलतापूर्वक किया जाता है और छिपी हुई हिंसा को भी यह नाम दे दिया जाता है लेकिन इस शब्द के रचयिता होने के नाते मुझे यह कहने की अनुमति मिलनी चाहिये कि उसमें प्रकट सभी प्रकार की हिंसा का, फिर वह कर्म की हो या मन की हो. पूर्ण बहिष्कार हैं। प्रतिपक्षी का बुरा चाहना या उसे हानि पहुंचाने के इरादे से बुरा बोलना सत्याग्रह का उल्लंघन है। सत्याग्रह एक सौम्य वस्तु है जिसमें क्रोध या द्वेष की कोई भावना नहीं है''[2] गाँधी जी को सत्याग्रह की अवधारणा को विकसित करने में दस वर्षों से भी अधिक का समय लगा। उन्होंने लिखा–अहिंसा के साथ जुड़े हुये सत्य के बल से आप सारे संसार को अपने पैरों पर झुका सकते है. अपने अधीन बना सकते हैं। सत्याग्रह का सार इसके सिवा और कुछ नहीं है कि राजनीतिक अर्थात राष्ट्रीय जीवन में सत्य और प्रेम को दाखिल किया जाये।'[3] सत्याग्रही में कतिपय गुणों का होना आवश्यक है जिसे हम सत्याग्रही संहिता कहते है।

''इसमें एकादश महाव्रत (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रहमचर्य, अस्वाद, अपरिग्रह, अभय, अस्पृश्यता निवारण, स्वदेशी, कायिक श्रम, सर्वधर्म समभाव) प्रमुख रूप से उल्लेखनीय है। उनके अनुसार 'विनम्रता' सत्याग्रही का आभूषण है। सत्याग्रही कुछ भी नहीं है यदि यह विनम्र नहीं हैं।''[4] सत्याग्रही की सफलता के लिये गांधी ने अनेक उपाय बताए जैसे सविनय अवज्ञा, हड़ताल, उपवास, असहयोग, धरना, हिजरत आदि।

सत्याग्रह और निष्क्रिय प्रतिरोध में अन्तर *: राजनीतिक विचारक सत्याग्रह और निष्क्रिय प्रतिरोध में विशेष अन्तर नहीं मानते। वास्तविक स्थिति में इन दोनों में अन्तर हैं। निष्क्रिय प्रतिरोध एक राजनीतिक हथियार है यही सत्याग्रह आध्यात्मिक शक्ति का प्रतीक एक नैतिक शस्त्र है। गांधी जी के अनुसार निष्क्रिय प्रतिरोध दुर्बल व्यक्ति का शस्त्र है। जिसमें वह अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिये हिंसा का भी सहारा लेता है। गांधी जी के अनुसार '' सत्याग्रह ऐसी तलवार है जिसके सभी ओर धार है उसे चाहे जैसे काम में ला सकते हैं। उससे काम लेने वाला और जिस पर वह काम में लाई जाये दोनों सुखी होते है। वह खून नहीं बहाती, पर काट गहरी करती है। उस पर जंग नहीं लगता, न कोई उसे चुरा ही सकता है। सत्याग्रही की तलवार को म्यान की जरूरत नहीं होती। उसे कोई छीन नहीं सकता।''[5] सत्याग्रह और निष्क्रिय प्रतिरोध में अन्तर को स्पष्ट करते हुये गांधी जी ने कहा कि सत्याग्रह शक्ति का और निष्क्रिय प्रतिरोध दुर्बलता का प्रतीक है। जहां निष्क्रिय प्रतिरोध में प्रेम का कोई स्थान नहीं हैं, वहीं सत्याग्रह में प्रेम के अतिरिक्त और कुछ हो नहीं सकता। सत्याग्रह का प्रयोग प्रत्येक व्यक्ति अपने निकटतम एवं प्रिय व्यक्ति के विरूद्ध भी कर सकता है। जबकि निष्क्रिय प्रतिरोध में हिंसा का स्थान होने से वह अपने निकटतम और प्रियजनों के विरूद्ध नहीं किया जा सकता। निष्क्रिय प्रतिरोध में विरोधी पक्ष को हानि पहुंचाने का अंश समाहित होता है जबकि सत्याग्रही तो स्वयं अपने को कष्ट पहुंचाकर विरोधी के हृदय को जीतना चाहता है।[6] सत्याग्रह सामाजिक और राजनीतिक संघर्ष में विशेष रूप से गांधीवादी दृष्टिकोण को दर्शाता है।*

(IJASSH) 2017, Vol. No. 3, Jan-Jun e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722

सत्याग्रह के विविध स्वरूप –

सविनय अवज्ञा : *सविनय अवज्ञा के माध्यम से गांधी जी किसी भी अनुचित कानून का उल्लघन करके जनता द्वारा उल्लंघन करवाकर कानून की त्रुटियों की ओर सरकार एवं जनता का ध्यान आकर्षित करते थे, जिससे कानून की गुणवत्ता समझकर जनता उस कानून का पालन करती थी। गांधी जी के मतानुसार सविनय अवज्ञा का अर्थ अनैतिक सरकारी कानून का अनुसरण कर उसकी विनम्रता और विनय के साथ अवज्ञा करना है अर्थात अहिंसक रूप से जीवनप्रद हो सकता है जबकि इसमें अवज्ञा की अपेक्षा सविनय पर अधिक बल दिया जाये।'[7]*

असहयोगः *गांधी जी के अनुसार असहयोग असत्य एवं बुराई का प्रतिरोध करता है ताकि सत्य और अच्छाई उत्पन्न हो सके। असहयोग की अन्तर्निहित धारणा यह है कि अन्यायी तब सफल हो सकता है जब वह अपने शोषण कार्य में यदि आवश्यकता हो, बलपूर्वक शोषित का सहयोग प्राप्त करें। असहयोग इस सिद्वान्त पर आधारित है कि निरकुंश प्रशासक के बावजूद सत्य एवं अहिंसा के संयंत्र द्वारा न्याय की प्राप्ति। यदि सरकार घोर अन्याय करती है तो शासितों को पूर्ण या आंशिक रूप से असहयोग करना चाहिये। जिससे शासन की अन्याय से रक्षा हो जाये।'[8]*

हड़तालः *गांधी जी ने हड़ताल को सत्याग्रह का महत्वपूर्ण साधन माना है। हड़ताल का उद्देश्य अपने व्यवसाय को बंद करके जनता और सरकार दोनों को प्रभावित करना है किन्तु इसमें किसी प्रकार की हिंसा नहीं होनी चाहिये। गांधी जी ने लिखा है ''लाभ की प्राप्ति हेतु हड़ताल करना मजदूरों का जन्मसिद्ध अधिकार है। इसके अतिरिक्त जो सेवाएं जनोपयोगी है और जीवन के लिये अनिवार्य है जैसे जल, विद्युत, पुलिस, बैंक, परिवहन प्रशासनिक सेवाओं आदि को हड़ताल का अधिकार नहीं होना चाहिये।'[9]*

उपवास– *गांधी जी ने उपवास का प्रयोग एक तकनीक के रूप में किया। भारत की स्वतंत्रता और साम्प्रदायिक एकता के लिये गांधी जी के उपवास प्रसिद्ध हुये।'' गांधी जी*

ने स्पष्ट किया कि उपवास सत्याग्रह का अंतिम अस्त्र है। उन्होंने चेतावनी दी कि प्रत्येक व्यक्ति उपवास करने का अधिकारी नहीं केवल प्रशिक्षित एवं प्रमाणित सत्याग्रही ही शुद्ध उपवास की क्रियान्विती कर सकता है। सत्याग्रही को उपवास का आश्रय अंतिम विकल्प के रूप में लेना चाहिये। केवल उसी स्थिति में जब न्याय उपलब्धि के सभी साधनों का प्रयोग किया जा चुका हो एवं वे सभी असफल रहे हों।''[10] उपवास में स्वार्थ, क्रोध अधीरता अविश्वास के लिये कोई जगह नहीं है। गांधी जी सार्वजनिक जीवन में 138 दिन उपवास पर रहे।

धरनाः *गांधी जी ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये चलाये गये असहयोग आन्दोलन एवं सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान धरने का अक्सर प्रयोग किया। विदेशी कपड़ों का बहिष्कार करने एवं मादक द्रव्यों की बिक्री रोकने हेतु धरने दिये गये। धरने का मुख्य उद्देश्य जनता को जागृत कर समाज में स्वस्थ वातावरण तैयार करना एवं विरोधी का हृदय पूर्णरूपेण परिवर्तन करना था।*

बहिष्कारः *गांधी जी ने बहिष्कार को सत्याग्रह का एक साधन माना हैं किन्तु यह भी आग्रह किया है कि बहिष्कार का प्रयोग जहां तक हो सके कम करना चाहिये। सत्याग्रह एवं बहिष्कार के अहिंसात्मक क्रियान्वयन के अन्तर्गत गांधी जी ने सविनय अवज्ञा को महत्वपूर्ण समरनीति माना। बहिष्कार यदि प्रारम्भ है तो सविनय अवज्ञा विरोध की परिणति। अहिंसात्मक क्रान्ति की प्रमाणिक स्थिति के रूप में सविनय अवज्ञा को अनिवार्य माना गया।''[11] बहिष्कार का अर्थ यह कदापि नहीं है जिस व्यक्ति का बहिष्कार किया गया है, उसे जीवन की आवश्यकताओं खाने–पीने, चिकित्सा इत्यादि सुविधाओं से वंचित कर दिया जाये। बहिष्कार के अन्तर्गत उपाधियों एवं सम्मानित पदों का त्याग, सरकारी कार्यालयों में आने–जाने, सरकारी उत्सवों में भाग लेने का त्याग सम्मिलित है।*

हिजरत– *हिजरत से तात्पर्य देश त्याग से है'' यदि नागरिक अपने प्रदेश में निरंकुश दमन चक्र से इतने असहाय एवं निरीह स्थिति का अनुभव करें कि उनके स्वाभिमान एवं आत्म*

सम्मान का अपहरण दैनिक आवृति हो जाये अथवा यदि वे अहिंसात्मक विरोध के साधनों की क्रियान्विति में स्वयं को अशक्त पाएं एवं अन्य कोई विकल्प न हो नागरिकों को अपने प्रदेश को त्याग कर अन्य स्थान पर चला जाना चाहिये। गांधी जी के आग्रह पर 1930 में बारदोजी, बोरसद एवं जम्बूसर में शासकीय दमन चक्र से त्रस्त होकर विरोधी सत्याग्रहियों ने बम्बई प्रदेश का त्याग कर बड़ौदा राज्य में शरण ली थी।''[12] दमन चक्र से बचने का जब कोई अन्य उपाय नजर न आये तो हिजरत का आश्रय लेना चाहिये।

गांधी जी ने सत्याग्रह की रणनीति को सफलतापूर्वक लागू करने के लिये प्रशिक्षणालय को आवश्यक माना। उनका मानना था कि जब हम युद्ध लड़ने के लिये या अन्य किसी भी बड़े कार्य को करने के लिये पहले उसका प्रशिक्षण लेते हैं ताकि कार्य सुगमता से सम्पन्न हो सके तो ऐसे में सत्याग्रही को भी प्रशिक्षण की आवश्यकता हैं। गांधी जी ने टॉलसटाय की विचारधारा से प्रभावित होकर दक्षिण अफ्रीका में टॉल्सटॉय आश्रम और फीनिक्स आश्रम स्थापित किये तथा भारत में साबरमती आश्रम जैसे प्रशिक्षण स्थल स्थापित किये जहां प्रशिक्षणार्थियों को भावी सत्याग्रह के लिये प्रशिक्षण दिया जाता था। सत्याग्रहियों के आध्यात्मिक और नैतिक विकास के लिये उनमें सत्य, अहिंसा, ब्रहाचर्य, अस्तेय, इन्द्रियों पर नियंत्रण, स्वदेशी भावना, रोजी कमाना, अस्वामित्व की भावना, निर्भयता, अछूतोद्धार और सहिष्णुता की भावना इत्यादि आवश्यक है। जो इन नियमों का पालन करने में सक्षम होगा वही सच्चा सत्याग्रही होने का अधिकारी हैं।

सत्याग्रह की प्रासंगिकता

गांधी जी भारत की राजनीति में 1920 से 1948 तक छाये रहे। वे निस्संदेह भारत के स्वाधीनता आन्दोलन के अग्रणी नेता थे। सत्य और अहिंसा को साथ लेकर उन्होंने आन्दोलन चलाये और सफल भी हुये। गांधी जी द्वारा किये गये सत्याग्रह का जहां एक तरफ लोग उनका गुणगान करते हैं तो वहीं दूसरी तरफ उनके आलोचक कई आधार लेकर उनकी आलोचना भी करते हैं। आलोचकों का मानना है कि सत्याग्रह का प्रयोग

अहिंसा द्वारा प्रत्येक परिस्थिति में नहीं किया जा सकता। डा. बन्दुरां के अनुसार ''इस बात का सामान्यीकरण करना कि सत्याग्रह द्वारा कहीं भी और किसी भी प्रकार के लोग अन्यायी का ह्रदय परिवर्तन कर सकते हैं, आत्मनाशक हैं।''[13] सत्याग्रह जिसके विरूद्ध किया जाता है अगर उसे शारीरिक कष्ट न भी हो तो मानसिक कष्ट तो होता ही है। ''आर्थर मूर ने इसे मानसिक हिंसा कहा है। आलोचकों ने सत्याग्रह के रूप 'उपवास' को आतंकवाद और राष्ट्रीय दबाव की संज्ञा दी है।''[14]

गांधी जी के कार्यों की चाहे कितनी भी आलोचना की जाये लेकिन यह स्वयं सिद्ध है कि उनके द्वारा सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिस्थितियों को ध्यान में रखकर जो रणनीति एवं तकनीक अपनाई गई उसमें उन्हें अन्ततः सफलता प्राप्त हुई। उन्होंने प्रशिक्षण हेतु आश्रम खोले, धार्मिक सहिष्णुता की बात की। उन्होंने सत्य और अहिंसा पर बल दिया। वर्तमान समय में उन्हीं का अनुसरण करते हुये जब कोई कानून अनुचित प्रतीत होता है तो जनता हड़ताल, उपवास का सहारा लेकर विरोध करती है। सरकार पर ऐसी तकनीकों का प्रभाव पड़ता है। अहिंसा के द्वारा हिंसा पर विजय पायी जा सकती है। विरोध करने का तरीका जो भी हो लेकिन वह सत्य और अहिंसा पर आधारित होना चाहिये। आज के वर्तमान समय में बढ़ती असहिष्णुता को लेकर लेखकों, कलाकारों और वैज्ञानिकों के साथ 53 इतिहासकारों ने एकजुटता दिखाई है –'' अब तक 33 लेखक साहित्य अकादमी पुरस्कार, 20 लेखक राज्य अकादमी पुरस्कार, 12 फिल्मकारों ने राष्ट्रीय सम्मान लौटा दिये हैं। 150 वैज्ञानिकों ने संयुक्त रूप से बयान जारी किया है।''[15] इन सभी लोगों का कहना है कि देश में असहिष्णुत्ता और डर के वातावरण के खिलाफ यह उनका विनम्र असहयोग है।'' ...सृजनशील गांधी जी का अंग्रेजों के खिलाफ, जो असहयोग आन्दोलन था यह उसी की वापसी है। लोगों को लगता है कि एक नये किस्म की क्रूरता अपने विविध मुखौटो के साथ पूरे देश में उभर रही है। हुकमरानों को सृजनशील लोगों के असहयोग से कोई फर्क नहीं पड़ता और सच तो यह है कि सृजनशील लोगों ने 1984 में सिखों पर अत्याचार और आपातकाल का जमकर विरोध किया था। गौरतलब है कि

लेखक, फिल्मकार, वैज्ञानिक इत्यादि भारत के सारे क्षेत्रों से आये हैं, अतः इस सविनय असहयोग को क्षेत्रीय नहीं कहा जा सकता।.... महानतम कवि कबीर की पंक्तियां 'घूंघट के पट खोल तोहे पिया मिलेंगे', कबीर का आशय सत्य पर कोई घूंघट नहीं है, यह तो मनुष्य के अंहकार का घूंघट है, जो उसे सत्य के दर्शन से वचित कर रहे है।''[16] सत्याग्रह का प्रयोग निर्भर करता है उन व्यक्तियों पर जो किस रूप में सत्याग्रह का प्रयोग कर रहे है, कहीं ये अपने निजी स्वार्थ के लिये ऐसा नहीं कर रहें।

वर्तमान युग चुनौतियों का युग है जहां मानव ही मानव को प्रताड़ित कर रहा है। ऐसे समय में सद्गुणों को विकसित करने की आवश्यकता है और यह कार्य अहिंसा द्वारा ही किया जा सकता है क्योंकि हिंसा को हिंसा से समाप्त नहीं किया जा सकता। प्रो. धवन के अनुसार गांधी जी ने सत्याग्रह के रूप में विश्व को सामूहिक संबंधों में व्याप्त अतिक्रमण एवं शोषण के विरुद्ध संघर्ष के लिये एक सृजनात्मक पद्धति प्रदान की। गांधी जी की मृत्यु के पश्चात उनके विचार और सिद्धान्त और सजीव और प्रभावशाली हो गये। डा. स्टेन्ले जोन्स ने इस अवसर पर लिखा हत्यारे की गोलियां महात्मा गांधी और उनके विचारों का अन्त करने के लिये चलाई गई थी। परन्तु उनका फल यह हुआ कि वे विचार स्वच्छन्द हो गये और मानव जाति की थाती बन गये। हत्यारे ने महात्मा गांधी की हत्या करके उन्हें अमर बना दिया। मृत्यु में वे जीवन की अपेक्षा अधिक बलशाली हो गये।''[17] महात्मा गांधी को अगर उनकी समग्रता में देखा और समझा जाये तो उनसे ज्यादा प्रगतिशील आधुनिक संसार में कोई नहीं हुआ। उनके जैसा निर्भीक व्यक्ति मिलना संभव नहीं है। जब तक संसार में अन्याय और अत्याचार रहेगा, तब तक उसके प्रतिकार के लिये महात्मा गांधी के सत्याग्रह और अहिंसा का सर्वोतम हथियार भी इस्तेमाल होता रहेगा। उनके अन्दर सत्य को सत्य, असत्य के असत्य कहने का साहस था। अगर देश महात्मा गांधी के दिखाये रास्ते पर चलता तो हम आज बहुत सी व्याधियों से ग्रस्त नहीं होते।

(IJASSH) 2017, Vol. No. 3, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. महादेव प्रसाद : महात्मा गांधी का समाज दर्शन, पृ. 124

2. यंग इण्डिया, 8 अगस्त 1929, पृ. 151

3. यंग इण्डिया, 10 मार्च 1920

4. यंग इण्डिया 8 जून 1935

5. हिन्द स्वराज्यः सस्ता साहित्य मंडल, 1958, पृ. 88

6. महात्मा गांधी : सत्याग्रह इन साउथ अफ्रीका, पृ. 113–114

7. प्रो. बी.एम. शर्मा, डा. रामकृष्ण दत्त शर्मा, डा. सविता शर्माः गांधी दर्शन के विविध आयाम पृ. 85

8. यंग इण्डिया 1919–22, पृ.44

9. प्रो. बी.एम. शर्मा, डा. रामकृष्ण दत्त शर्मा, डा. सविता शर्माः गांधी दर्शन के विविध आयाम पृ. 85

10. राजेश कुमार शर्मा, संगीता शर्माः गांधी और नेहरू राजनीतिक शक्ति एवं सामाजिक परिवर्तन, पृ. 47

11. राजेश कुमार शर्मा, संगीता शर्माः गांधी और नेहरू राजनीतिक शक्ति एवं सामाजिक परिवर्तन, पृ. 47

12. राजेश कुमार शर्मा, संगीता शर्माः गांधी और नेहरू राजनीतिक शक्ति एवं सामाजिक परिवर्तन, पृ. 47

13. पुखराज जैनः प्रतिनिधि भारतीय राजनीतिक विचारक, पृ. 152

14. पुखराज जैनः प्रतिनिधि भारतीय राजनीतिक विचारक, पृ. 152

15. दैनिक भास्कर (दैनिक समाचार पत्र) जयपुर, 30 अक्टूबर 2015, पृ.1

16. दैनिक भास्कर (दैनिक समाचार पत्र) जयपुर, 30 अक्टूबर 2015, जयप्रकाश चौकसेः परदे के पीछे. पृ. 6

17. राजेश कुमार शर्मा, संगीता शर्माः गांधी और नेहरू राजनीतिक शक्ति एवं सामाजिक परिवर्तन, पृ. 34